

संयोजक : जय प्रकाश शर्मा  
शुत अन्य पुस्तकें

- ❶ जय देश जय इन्दिरा
- ❷ ग्रहिसा परिव्राजक मुनि सुशील कुमार जी
- ❸ एक जीवन करोड़ तत्व
- ❹ आत्म संयम
- ❺ विश्ववन्दनीय मुनि श्रेष्ठ सुशील कुमार श्रीर  
उनका अभय दान
- ❻ जियो श्रीर जीने दो,

एक जीवन : चरोंड तत्य



मुनि श्री नुशील कुमार जी महाराज

एक जीवन करोड़ तत्व  
शुद्धि के लिये सुशुद्धि के लिये



प्रकाशक :  
श्री श्री प्रकाश प्रकाश



श्री श्री  
शुद्धि सुशुद्धि के लिये



प्रकाशक :  
श्री श्री प्रकाश प्रकाश  
प्रकाश

कमला पाकेट बुक, मेरठ

मूल्य : बीस रुपये



मुद्रक :  
समीता प्रिंटिंग प्रेस  
पी० एन० नर्मदा रोड मेरठ

---

FK JEEVAN KAROR TATAV :

MUNI SHRI SUSHIL KUMAR Ji

---

## प्रकाशकीय

इसे मैं एक ब्रह्म यज्ञ संयोग और मुनयोग ही  
 का हूँ कि नीरवकर भगवान महावीर के परिनिर्वाण  
 मोह के सम्पर्क होने से साय देण में अनुनासन-पर्व  
 कुमारन्त हुआ और प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा  
 ने ने कोटि-कोटि भारतीयों के लिये २० सूत्रीय कार्य-  
 का श्रीमण्डल किया। ऐसे सुप्रसन्न पर जय मुनि श्री  
 ल कुमार जो विद्वत् को इतिहास का सदेश देकर पुनः  
 न आ रहे हैं तो हम आदर्शिय मुनिवर गुभाग जी  
 कृपा से पाच पुस्तकों आपकी भेंट कर रहे हैं। इस  
 का नामा के संयोजक देण के जाने-माने राष्ट्रीय उप-  
 न्यायकार श्री जय प्रकाश शर्मा हैं। उन पुस्तकों के  
 आवरण दिल्ली श्री सुधीर मिश्रा हैं। समस्त मित्रों के  
 सहयोग से ये पुस्तकें उस पुण्य भूमि को समर्पित हैं  
 जहाँ राम, कृष्ण, महावीर, महात्मा गांधी, मुनि सुधीर  
 कुमार और देण-गौरव प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा  
 गांधी के नाय-नाय हम सब ने जन्म लिया।

नरेण चन्द्र जैन

प्रध्यक्ष

कमला पाकेद बुक्स

५६ - दीण महल, मेरठ



एक अरने से विदेशी धार्मिक-संस्थाओं और बिदेव धर्म संगम के विदेशी प्रतिनिधियों का यह धायह या कि मुनि श्री विदेश यात्रा पर आयें और जीवन के यांत्रिकता से ऋवे, मनुष्य के वास्तविक रूप की तलाश में भटक रहे पश्चिमी लोगों को मार्ग दिखायें। फिर विश्व धर्म संगम के संस्थापक, अध्यक्ष होने के नाते विदेशों में इसके कार्य को अधिक विस्तृत रूप देने की दृष्टि ने यह यात्रा और भी धावश्यक थी। वस्तुतः भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाणोत्सव वयं में यह यात्रा प्रभु के प्रति वास्तविक सच्ची श्रद्धांजली थी।

लगभग साढ़े तीन हजार वर्ष के जैन धर्म से इतिहास में यह एक चौंका देने वाली घटना थी कि एक जैन संत वाहन का प्रयोग करके विदेश जा रहे थे। पर, वस्तु स्थिति के मर्म को जानने वाले उनकी इस यात्रा के औचित्य और महत्व को जानते थे। यही कारण था कि आचार्य देश भूषण जी, आचार्य तुलसी जी, उपाध्याय विद्यानन्द जी, पंजाब के श्री विमल मुनि जी और मुनि नेमिचन्द्र जी तथा अनेक संतो ने खुले रूप में उनका समर्थन किया। उन्हें स्नेह, सहयोग और शुभ कामनाएं प्रदान कीं। वर्तमान समय में विज्ञान और धर्म को समन्वित होकर चलना होगा। मुनि श्री की यह मान्यता के धनुरूप ही यह यात्रा थी।

विरोध करने वाले जान चुके थे कि वे विरोध मात्र कर रहे हैं। न तो श्रद्धालु धर्म प्रिय जनता ही उनके साथ है, न ही विवेचन विश्लेषात्मक दृष्टि वाले प्रखर बुद्धिजीवी।

भारतीय संघ सदस्यों द्वारा दिनांक २-५-७५ को

लोकसभा में मुनि श्री सुशील कुमार जी

म० सा० को निम्नलिखित अभि-



उनकी इस विदेश यात्रा को विवेकानन्द और महात्मा गांधी की परम्परा से जोड़ा ।

विदुषी डा० सरोजनी महिषी ने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण में मुनि श्री सुशील कुमार जी को क्रांतिकारी मुनि की सजा देते हुये कहा, 'धर्म की सच्ची भावनाओं को देश और काल की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता । ऐसा करना सकुचित दृष्टिकोण होगा । मुनि जी जब आध्यात्मिकता की ऊँची उड़ान भर सकते हैं तो विमान की उड़ान भरने में क्या दोष है ? जबकि उनकी यात्रा का उद्देश्य महान् है और उससे विदेशों में भारतीय संस्कृति का मुख उज्ज्वल होगा ।' साहु शांति प्रसाद जैन ने आशा प्रगट की कि मुनि जी की इस यात्रा से विदेशों के लाखों लोगों का भला होगा ।

समस्त अभिवादनो, सद्भावनाओं, शुभ मुगलकामनाओं का उत्तर देते हुये मुनि श्री सुशील कुमार जी महाराज ने कहा कि 'मैं विश्व में आध्यात्मिक क्रांति लाना चाहता हूँ । मेरा उद्देश्य विभिन्न धर्मों में समन्वय और सद्भावना पैदा करना है । उन्होंने कहा—विश्व में शांति लाने के लिये राजनैतिक संधि सम्झौतियाँ बहुत हो चुके हैं । अद्य समय आ गया है कि आध्यात्मिक माध्यम से विश्व में शांति का प्रयास किया जाये । सत्य और अहिंसा के सारी दुनिया में प्रचार से ही शांति कायम हो सकती है ।

मुनि जी ने विश्वास दिलाया कि विदेश यात्रा में प्रतिनिधि-मंडल का हर सदस्य एक विधिष्ठ आचार-संहिता का पालन करेगा । और पूरी कोशिश करेगा कि इस यात्रा से भारत का गौरव बढ़े । इस अवसर पर स्वामी चिदानन्द जी महाराज का





प्रारम्भ हुआ। जब आपने अमेरिका की परम भौतिक संभवमयी  
 करती पर पदापगं किया। यह शहर था—सांत एजंलस। तीन  
 दिन के घरी प्रवास में मुनिश्री के सम्मान में वहाँ की जंत इन्ट-  
 गोन इन्स्टीट्यूट, वेदांत सोसायटी केक प्राइम, योगी भजन  
 छात्रन तथा अन्य योगाश्रमों में नमारी किये गये। तथा योग  
 नहित प्राध्यात्मिक के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चाएँ की  
 गई। इन योगाश्रमों के छात्र-छात्राओं ने मुनिश्री से जैन योग  
 तथा जैन दर्शन के संबंध में विभिन्न विज्ञातात्मक प्रश्न पूछे।  
 लॉस एंजल्स में मुनिश्री ने 'जैन केन्द्र' तथा 'विद्वय धर्म संगम'  
 की शाखाएँ स्थापित कीं।

27 जून से न्यू मेस्सिको में शुरू होने वाली 'दी यूनिटी  
 आफ मैन'—(मानव एकता) कांग्रेस में भाग लेने के लिये मुनि  
 26 जून को वहाँ पहुँचे। एयर-पोर्ट पर प्रख्यात भजन योगी के  
 शिष्यों ने आपका हार्दिक स्वागत किया। मुनिश्री को वहाँ पृथ्वी  
 की नतह ने 9 हजार फुट ऊँची सुरम्य पहाड़ी 'पिकमेली' पर  
 बने भवन में टहराया गया। श्री भजनयोगी के अमेरिकी शिष्यों  
 ने विभिन्न सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किये। 'दी यूनिटी आफ मैन'  
 कांग्रेस में मुनिश्री के प्रभावशाली भाषण हुये। उन्होंने नवकार-  
 मत्र तथा जैन स्मृत सुनाकर जैन धर्म के विभिन्न पहलुओं पर  
 विस्तृत चर्चा की। श्री भजन योगी के सहयोग से मुनि जी ने  
 भगवान महावीर की 25 वीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में 3  
 नवम्बर को 'अहिंसा दिवस' मनाने तथा 8 दिसम्बर को गुरु  
 तेग बहादुर त्रिशाब्दी दिवस मनाने विषयक प्रस्ताव प्रस्तुत  
 किया जो भारी करतल ध्वनि के बीच पारित किया गया।

इसके बाद डेनवार होते हुये मुनिश्री 2 जुलाई, 1975 को  
 मियामी पहुँचे। वहाँ के 'मियामी महिला क्लब' में प्रेरणात्मक



के ही फोरैस्ट रिजर्च हास्पिटल के एक विशेष निमन्त्रण पर मुनि जी वहाँ प्यारे। अस्पताल में एक मशीन स्थित है। जो व्यक्ति की मानसिक एवं शारीरिक द्रवित को प्रदर्शित करती है। मुनिश्री जब इस मशीन (मानसिक व शारीरिक परीक्षक) 'टेस्टिंग आफ माइंड एण्ड बोटिली चायनेशन' पर बैठे तो मुई एकदम 120 की अधिकतम गन्ना पर पहुँच गई। जिसे देखकर वहाँ उपस्थित लोगों ने दाँतों तने उगली दबा ली। मुनिजी इस प्रदर्शन से अस्पताल के डायरेक्टर डा० मोरिन स्कावायर गदगद हो गये और उन्होंने इस विद्या को सिखाने का आग्रह किया।

अस्पताल के अधिकारियों और कर्मचारियों के विशेष आग्रह पर मुनिश्री ने एक विशेष मानसिक स्थिति 'नेमी-ट्रान्स' में स्थित होकर अपने शरीर के विभिन्न अंगों के तापमानों में आश्चर्यजनक फर्क करके दिखाया। उन्होंने समागित्य अवस्था में ही वहाँ उपस्थित लोगों की मनः स्थितियों को भी ठीक ठीक बतला दिया।

इसी रोज रात्रि को शिकागो की 'नार्य-वेस्ट यूनिवर्सिटी' ने मुनिवर के प्रवचन का आयोजन किया। प्रवचन के बाद उन्होंने जिज्ञासु श्रोताओं द्वारा मन, इन्द्रिय और आत्मा आदि के सम्बन्ध में पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के तक सम्मत उत्तर दिये। मुनि श्री ने शिकागो के डा० के० सी० जैन को वहाँ स्थापित विश्व धर्म संगम की शाखा का सयोजक मनोनीत किया।

12 जुलाई को मुनिजी ने क्लीवलैंड स्टेट यूनिवर्सिटी में महत्वपूर्ण प्रभावशाली भाषण दिया। 14 जुलाई को प्रो० चितरंजन के घर हुई बैठक में एक अमेरिकी महिला को विश्व

धर्म संगम का संयोजक बनाया गया ।

डेट्रॉय से 'इन्टरनेशनल इन्स्टीट्यूट' में 15 जुलाई को बोलते हुये मुनिश्री ने कहा 'सभी धर्मों' में सत्य मौजूद है । जब सभी धर्म एकत्र हो जायेंगे तो वे अधर्म के विरुद्ध एक बड़ी शक्ति बन सकेंगे । वास्तविक लड़ाई धर्म और धर्म के बीच नहीं, धर्म और अधर्म के बीच है । डेट्रॉयट यूनिवर्सिटी में भी मुनिश्री का प्रवचन हुआ । उन्होंने यहां आवाहयन किया कि विभिन्न धर्मों के लोग विभिन्न धार्मिक पर्व एक साथ मनाएं ।

'नाथ अमेरिकन वेजिटेरियन सोसायटी' द्वारा 16 से 28 अगस्त, 1975 तक आयोजित 'विश्व शाकाहार सम्मेलन' में मुनिश्री सुशील कुमार जी ने बोलते हुये कहा कि जब तक पशुओं का मांस और रक्त मनुष्य की शिराओं में बहता रहेगा, तब तक उसमें मनुष्यता आ नहीं सकता । धरती को स्वर्ग बनाने वाले विश्व शांति का मार्ग तब तक प्रशस्त नहीं हो सकता । अतः यह आवश्यक है कि मनुष्य मांसाहार छोड़ दे ।

ओटावा में 'वर्ल्ड पालियामेंट आफ रिलीजन्स' में अमेरिका के बारे में बताते हुये मुनिश्री ने कहा—यहां वैज्ञानिक पद्धतियों, तकनीकी ज्ञान तथा भौतिक कामनाओं ने बहुत प्रगति की है । लेकिन विज्ञान का धर्म के साथ समन्वय हुये बिना मनुष्य राक्षस बनकर एक दूसरे से लड़ने-भिड़ने सोगेगा । अतः वर्तमान युग में धर्म स्थानों को प्रयोगशाला तथा प्रयोगशालाओं को धर्म स्थान बना देना चाहिये ।

मुनिजी के सानिध्य में जंतु धर्म के पवित्र पशुपरा शिकारियों में गुनाने गये इस अवसर पर मुनिश्री के केश लोच का दृश्य निम्नानों निवासियों ने आश्चर्य से देखा यही कार्यक्रम वहां के

टेलीविजन पर भी दिखाया गया। पर्युषण पर्व के दौरान मुनि जी ने विभिन्न विषयों पर रोचक प्रवचन दिये। शिकागो के ही 'इन्डियाना राज्य' में आपने छात्र-छात्राओं को जैन योग एवं तीतराग मुद्रा की क्रियाएं दिखायी तथा लुजिनाम यूनिवर्सिटी में 'अहिंसा' पर भाषण दिया।

विदेशों में मुनिश्री के त्याग, ज्ञान-प्रवचनों आदि से आकर्षित होकर अब तक संकड़ों व्यक्ति जैन धर्म ग्रहण कर चुके हैं। सम्भवतः वहां के लोगों की आध्यात्मिक रुचि को देखते हुये ही मुनिश्री ने एक भाषण में उद्धोषणा की कि अगले बीस वर्षों में अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा योग केन्द्र होगा।

3 नवम्बर 1975 को न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र संघ के ममानगर में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के संबंध में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। अमेरिका के प्रतिष्ठित-गण मान्य व्यक्तियों ने इस समारोह में भाग लिया।

सभा में भाषण देते हुये मुनिश्री ने सभी धर्मों के लोगों को एवता और अहिंसा के मार्ग पर चलने को कहा। उन्होंने लोगों से 'जियो और जीने दो' का सूत्र अपना लेने को कहा। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि अमेरिकी जनता आध्यात्मिक में रुचि लेने लगी है। वह यह अनुभव करने लगी है कि विज्ञान के साथ आध्यात्मिक का समन्वय होने पर ही मानव का कल्याण हो सकेगा। इसके बाद ही संयुक्त राष्ट्र संघ में विश्व धर्म संगम कार्यालय स्थापित किया गया।

यह एक आश्चर्यजनक सुखद तथ्य है कि अमेरिका के 15 राज्यों में महावीर केन्द्रों की स्थापना करने का प्रयास चालू है। प्रेरणा और बोध के लिये केन्द्रों में भ० महावीर की मूर्तियां

एवं स्तूप स्थापित किये जायेंगे। मुनिश्री की ही प्रेरणा से 'यार्क' में श्री उदय चन्द्र जैन 'जैन आश्रम' की स्थापना की निश्चय ही एक प्रशंसनीय कार्य है। मुनिश्री के प्रवचनों प्रभावित होकर विदेशों के लगभग पाँच सौ नर-नारियाँ ध्य दीक्षा ले चुके हैं। तथा मुनिजी के सत्प्रयासों के फलस्वरूप लगभग एक मिलियन लोग शाकाहारी बन चुके हैं।

अमेरिका के यहाँ प्रेषित एक वक्तव्य में मुनिजी ने व 'मैं साधु की मर्यादा का पालन करते हुये अहिंसा को वि व्यापी बना दूंगा। उन्होने आगे कहा कि साधु को सेवक हं चाहिये, न कि विक्रेता।' उन्होने उन लोगों की आलोचना जिन्होने धर्म को रूढ़ि बना दिया है। उन्होने वक्तव्य में कि अमेरिका के लोग जिग कार्यों को करने लगते है असाधारण रूप से करते हैं।

एक विदेशी पत्र को डी नई मेंट वार्ता में योग पर करते हुये मुनिश्री ने बताया कि, योग साधना के द्वारा धार्मिकता स्थापित की जा सकती है। क्योंकि इससे ईमा, महत् बुद्ध जैन महान तपस्वियों के अनुभव हमें मिलते हैं।' उन बताया कि 'आलौकिक शक्ति' से सम्पर्क करना किसी विशेष की अपेक्षी नहीं है। मुनिश्री ने योग को मस्तिष्क निद्रा बताया।

एक अन्य अमेरिकी पत्रिका को दिये गये वक्तव्य में जी ने कहा, वर्तमान विज्ञान टेक्नोलोजी मानव की समस्त हल करने में समर्थ नहीं है। मत्प सनातन है। अतः यदि को निराशा से बचाना है तो विज्ञान और धर्म को समान होकर चलना होगा।

तभी विदेशी पत्र-पत्रिकाओं ने मुनिजी पर दिये लेखों के साथ-साथ महत्प्रशंसा दी है। उदाहरणार्थ कुछ है—  
 'दो भाषिद्वयों की एक मफनी को भी मुत्तवान नहीं पहुंचाते (टैलाटररैन) 'भारतीय पवित्र मनुष्य चाह किची भी जीव मृति नहीं पहुंचाते (हास्टन मानिकल) प्रातिप्रसार के नियम मनुष्य पतारे (टांडियाना डेली स्ट्रीट) वे एक पतंगे को मुत्तमान नहीं पहुंचाते।' (फोटाचा जनरल) 'दयालु गुरु का शिक्षणो याना के अथानर पर मनोवीनानिक चमत्कार' (कामो दिव्युव) आदि।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार मुनिश्री नुनील कुमार जी भारत को भ्रमण के प्रथम सप्ताह तक भारत लौटना था। किन्तु अमेरिकी धार्मिक मंत्रियों, धर्मप्रिय धरानु लोगो का विद्वध धर्म संगम के अमेरिकी प्रतिनिधियों के हार्दिक आग्रह-कारण मुनिश्री ने अपने प्रवास का समय बढ़ाया। प्रतिनिधि-मंडल के जो लोग भारत लौटे हैं उनमें से श्री सुल्तारान जैन बताया है कि मुनिश्री जिस संयम पद्धति का पालन यहां भारत में करते थे, वही विदेशों में करते हैं और यहां के जंगलों पर श्री मुनि जी के भाषणों का बहुत प्रभाव पड़ा है। अतः पर गये श्री सादी लाल जैन ने विदेशों में जन्त परिवारों को संगठित करने की दिसा में बहुत उल्लेखनीय कार्य किया।

इनके अलावा न्यूयार्क के शिवानंद योगप्राश्न में मुनिश्री का अर्थात् प्रवचन माना चली जितने हजारों अमेरिकी नेर दिनों ने लान उठाया।

दारा के पहाड़ी स्थान बालमोरान में शिवानंद योग वेदांत









सोमों को उनका विरोध न करके बल्कु स्थिति की विवक्षित और उनकी भाषा की महत्ता को समझने हुए उनका साथ देना चाहिये ।

श्री मती जैन ने कहा कि प्रायश्चित्त मुनि श्री जी नहीं मानता है, बल्कि उन्हें करना है किन्तुने इस महान् भाषा का विरोध किया था ।

चम्पई के श्री भागकर ने बताया कि वेमुनि श्री ने जिलाओं में पदुंका पर्यं के अथवा दर भिजे थे । उन्होंने बताया कि मुनिश्री के प्रवचनों में विदेशों में यह रहे जैन सोमों ने जी धर्म की भूले सँडे थे धर्म गम्यन्धी नगजागरण का प्रसफुटन हुआ है ।

सन्ना की सम्प्रभता करने हुए पद्म श्री प्राणी गिन गेट धानन्द राज मुरागा ने इस बात पर प्रति हर्ष प्रकट किया कि मुनिश्री ने भ० महावीर निर्वाण सत्ताजी पर्यं में यह कार्य पर दिखाया है जो निष्ठले २५०० वर्षों में कोई न कर पाया था । वे भाग्य धर्म की मर्षाया का ध्यान करते हुए प्रभार के महान् कार्य को कर रहे हैं । उनका विरोध चम्पूतः धर्म प्रचार में धर्म के वास्तविक स्वरूप का विरोध करना है । धर्म की सत्ताधियों पुरानी भूल को गुमार कर मुनिश्री ने विदेशों में जैन धर्म की जो सत्ताया पहराई है, उनका मुल्यांकन धाने वाली पीढ़ी करेगी ।

श्री मुरागा ने कहा कि मुनिश्री ने इन पौरान सद्धिगा और धानाकार के महत्व के भाषों लोगों का भावनात करवाया है, जो अपने आप में सतितीय है ।

श्री मुन्तान गिह् वाकलीवाल ने मुनिश्री के प्रति थला वचन प्रकट करते हुए कहा कि हम भारतवासीयों के मन में

मति के विचारों की समझ-बूझ होना चाहिए। यहाँ तक कि विचारों की प्रकृति और जगत् की प्रकृति पर भी भाष्य पधारने के लिए हमें उचित द्वारा विदेशों के सम्मान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

उमके पूर्व ही सम्पन्न मति के भी अपने विचार मुनिश्री की विदेश यात्रा की उपनिमित्तों के नाम से प्रकट किये। इसके अलावा श्री टेकचन्द्र जैन ने अपने विचार प्रकट करते हुए आग्रह किया कि उनकी विदेश यात्रा से सम्पन्न तमाम राज्यों का निवारण किया जा सके।

बैठक का सह-संयोजकत्व श्री चन्द्र चन्द्र कानटिक ने किया।

बैठक के अंत में सर्व सम्मति के एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें मुनिश्री नुशील कुमार जी महाराज के महावीर जयन्ती पर स्वदेश पधारने का अनुरोध किया गया।

बैठक में उनके स्वागताथं एक समिति गठित की गई जिसमें प्रमुख हैं :—

- 1- श्री भीखूराम जैन ।
- 2- श्री मति श्रीम प्रभा जैन
- 3- डा० रामानन्द
- 4- श्री मुल्कराज जैन
- 5- श्री महताव चन्द्र

स्वागत समिति सभी जैन अर्जन प्रमुख व्यक्तियों से सम्पर्क करके भिन्न भिन्न क्षेत्रों से सदस्यों को सम्मिलित करके एक महासमिति की स्थापना करेगी जो सम्पूर्ण भारत में प्रतिनिधि नियुक्त कर प्रचार कार्य व्यापक रूप से सम्पन्न करेगी।





इस प्रकार का अभाव ऐसा हमारे विषे दिखाना सामान नहीं ।  
 अगर हम नहीं तोर से अभाव न दे सके और हम लोग का ठीक  
 इलाज न दूँ सके तो हमों की बीमारी समाप्त में बन ही होती  
 नहीं जायेगी । इसके विषे हमें ध्यान में रखकर यह समझना है  
 कि हमारे बीच कृषि विद्यार्थियों के होते हुए भी भगदड़े क्यों हो  
 रहे हैं ?

अभी तक मुझे मान्य है, इन सब भगदड़ों का कारण यह है  
 कि सब धर्मों के मूल अकारक, संस्कार का समीक्षा इस समाज में  
 न रहे तो इन धर्मों की बाह्यतौर उनके सिद्धों के साथ में घड़े ।  
 उन्होंने राजनीतिक और नैतिक विचार से निजा और धर्मों के  
 नाम पर धन-धन किराई और जातियों के समे एवं दूसरों  
 को मूढ़ने का काम करने लगे । अर्थात् इन किराई के धर्म  
 धारण में धन-धन से, इमान्दारी निरके जो कि अधिक उत्पत्ति  
 कर लाने में, वे एक-दूसरे के नाम पर धर्म-धर्म करने लगे । इसी  
 तरह धर्मों के इतिहास के अन्दर जातियों की मान्यता-विद्या  
 और मूढ़ने-समोढ़ने भी प्रवृत्ति ने धर्म के इतिहास को मूल के  
 फल में भर दिया । इन तरह जिसकी हम धर्म का इतिहास  
 कहते हैं, वह सभी मान में धर्म का इतिहास नहीं है । हम इति-  
 हास के बनाने में चाहे किसी भी धर्म का नाम लिखा हो, चाहे  
 वह कुछ धर्म हो, ईसाईयत हो गुरुतः धर्म हो या हिन्दू धर्म हो  
 वे इतिहास इन धर्मों के नाम पर बनाये गये ही गये हैं, नैतिक  
 धर्म में वे इन धर्मों के कश्चित्तान पर ही गड़े हैं । अगर  
 ऐसा नहीं तो मुझे यह समझ में नहीं आता कि उन महात्माओं  
 के नाम पर उनके अनुयायियों ने संसार के तारे तारे देशों को  
 फल कराने का विजय-प्रभियान किस तरह उठाया ? इन देशों  
 में भी पौर्वीज, कौपीनिक पादरियों ने लोगों को खबरन ईसाई



बनने के लिये ही आकाशमें छिये, वह किसी से छुने नहीं  
 उसी तरह मुझे यह भी समझ में नहीं आता कि हिन्दू  
 अन्तर्गत मनु के उक्त वर्णों के लक्षण वर्णों के प्रकाश लक्षण  
 गये हैं। लेकिन इन वर्णों में इस तरह अस्पष्टता की वजह  
 योग एक-दूसरे को छूने आदि में बूझा करते पाते। मुझे यह  
 समझ में नहीं आता कि किस महान्या बुद्ध ने प्रकृतियों को  
 लिये क्या नाम का उपदेश दिया था क्या छोटी-से-छोटी  
 लीला बना ही आकाशिकतक अर्थात् उसे बहुत बड़ा नाम  
 काया था, वही के सामने वाले बुद्ध वर्णविज्ञानों कि प्रकृत  
 आरंभ समार में सबसे प्रथम नामाहारी है। उसी तरह मुझे  
 भी समझ में नहीं आता कि किस मुहम्मद साहब ने प्रकृतियों  
 लिये के प्रति पूरा ध्यान करने का उपदेश दिया था वही  
 प्रकृतियों ने एक हाथ में कृपाय लेकर एकपादिक से एक  
 प्रमाण महासागर तक किस तरह लान ही लिये। बहाई! ई  
 यह समझ नहीं पड़ता कि किस लैलियों के लिये एक पदमे  
 मानने में भी नाम लक्षणा है वही में से किस तरह प्राप्त  
 पाते हैं, प्रकृत होती है, अर्थ करते हैं और निश्चय लेते हैं  
 हैं। इन सब बातों से मुझे वही समझ पड़ता है कि इन  
 वर्णों के अनुपाती करने हुए वर्ण के सिद्धान्तों के मध्यम यह  
 गये हैं क्या इन वर्णों के मूल आदर्शों एवं नियमों को ही उन्हें  
 बुझा दिया है। इन वर्णों का जो प्रकाश ही गया था वह  
 मूलमे-मूलमे एक विस्तृत स्थायी हो गया है। वही वास्तव है।  
 आरंभ मारा वर्ण विस्तृत ही गया है कि समार के बहुत से ही  
 इन सभी वर्णों को वही लक्षण से देखते हैं। समार में ही  
 राष्ट्रों के योग ही आरंभ वर्ण का नाम देने को ही प्राप्त समझ  
 है। उसके पीछे उनके मन में वर्णों का यह विस्तृत रूप ही का

हमारा है। अगर इन विद्या रूप का इन परिष्कार न कर सके तो जिस तरह एक साप के सामने हजारों भेड़ों का झुंड एक साथ ही भागता है उसी तरह कि भेड़ों भागने पर भी साप में डूटकारा नहीं पा सकती है उसी तरह ये धर्म भागने को चेष्टा करते हुए भी भाग नहीं सकेंगे और विधान को हटा एवं विधान की भावना इन धर्मों को एक साथ ही हटा जायेगी।

तो हमें चाहिए कि हम इन धर्मों के रव को परिष्कृत करें। इन धर्मों के अन्तर्गत के बाद इनमें जो गुराद्यों हैं वे भी दूर करें। सबसे पहले हर एक धर्मों को चाहिए कि यह धर्म-धर्म धर्म की गुराद्यों को दूर करे गया धर्म-धर्म धर्मों के सम्मेलन हुआ करके इन धर्मों की गुराद्यों पर विचार करें और उनको दूर करने की चेष्टा करें। क्यों कि हर एक धर्म के पैगम्बरों के अन्तर्गत एक छोटे दायरे रहे हैं। इसलिए हमें चाहिए कि इन पैगम्बरों के उपदेशों को निरोधान कर दें, लेकिन उन्हें स्पष्ट रूप से समझने की भी चेष्टा करें। ताकि इतिहास में भी कि-क्या रही है, उसे भी हम समझ सकें। हर एक धर्म के अनुयायी धर्म-धर्म धर्म सम्मेलन करने पर जिस तरीके पर पहुंचें, उन तरीकों को फिर दूसरे धर्मानुयायीयों के साथ बैठ करके समझने की चेष्टा करें, ताकि हर एक धर्म को यह पता लग सके कि हमें दूसरे धर्म पाने किम नजर से देखते हैं। तब हमारा पहंकार कुछ कम हो जायेगा तथा इतिहास के कुछ और धर्मों की तस्वीर भी स्पष्ट हो जायेगी। दूसरा काम यह होगा कि अलग-अलग धर्मों के प्राचार्य और अनुयायी एक साथ बैठकर के यह फैसला करें कि एक धर्म का दूसरे धर्मों में किन-किन बातों में मतभेद है और यह मतभेद किस तरह से दूर किया जा सकता है। इस बारे में हमें धर्मों के बीच पारस्परिक के विचार



जा है। अगर उन विद्या रूप का हम परिष्कार न कर सके जिस तरह एक माप के सामने हजारों भेड़ों का झुंड एक ही भागला है उसी तरह कि भेड़ों सामने पर भी बाप से डकारा नहीं पा सकता है उसी तरह वे धर्म सामने भी खड़ा रहे हुए भी भाग नहीं सकेंगे और विधान की दृष्टा एवं विधान की भावना इन धर्मों को एक माप ही का जानगी।

हो हमें चाहिए कि हम इन धर्मों के रूढ़ को परिष्कार करें। न धर्मों के बनाने के बाद इनमें जो सुनाइया जाती है उसको दूर करें। मचने पहले हर एक धर्मों को चाहिए कि वह धर्म-धर्म धर्मों की सुनाइयों को दूर करे वना धर्म-धर्म धर्मों के सम्मेलन सुना करके इन धर्मों की सुनाइयों पर विचार करें और नवी दूर करने की चेष्टा करें। वरों कि हर एक धर्म के सम्बन्धों के धर्म एक छोटे चापरे रहे हैं। एतद्विषय हमें चाहिए कि इन धर्म-धर्मों के उपदेशों को निर्वाचन करें, किन्तु उन्हें स्पष्ट रूप से समझने की भी चेष्टा करें। ताकि इतिहास में जो कर्मवाजी रही है, उसे भी हम समझ सकें। हर एक धर्म के अनुयायी धर्म-धर्म धर्म सम्मेलन करने पर जिस तरीके पर होंगे, उन तरीकों को फिर दूर करे धर्म-धर्म-धर्मों के माप बँट करके समझने की चेष्टा करें, ताकि हर एक धर्म की यह पता लग सके कि हमें दूर धर्म वाले किम नजर से देखते हैं। तब द्वारा अहंकार कुछ कम हो जायेगा तथा इतिहास के कुछ धर्म धर्मों की तस्वीर भी स्पष्ट हो जायेगी। दूसरा काम यह होगा कि प्रलग-प्रलग धर्मों के प्राचार्य और अनुयायी एक साथ बैठ कर के यह फैसला करें कि एक धर्म का दूसरे धर्मों से किम-किम बातों में मतभेद है और वह मतभेद किम तरह से दूर किया जा सकता है। इस बारे में हमें धर्मों के बीच पचशील के विचार



के नाम पर ही विभागे हैं। इसलिए यह बहुत बुरी है कि  
 धार्मिक साम्राज्यवाद को गलत कर दें। जब सभी धर्म ऊँचे  
 पर नज़र कीटि के हैं, तो हमें समझ में नहीं आता कि क्यों  
 एक धर्म दूसरे धर्म के अनुयायियों को धरने में विभागे की-सेष्टा  
 करता है। अगर समझ-दुनकर कोई एक धारणी एक समूह में  
 गुरे समूह में जाता है तो यह एक बलवदाव है। लेकिन लोभ  
 , ज्ञानन से, जौद-बदरदानी से, साम्राज्य से धरने की एक धर्म  
 प्रथा प्रचार करना चाहता है तो यह धरने पर ही कुदर-  
 त्त करना है। मुझे हम धार पर गौदा गते समझ है कि भारत  
 धरनी भी धर्म प्रचार करने के लिये साम्राज्य या गधे पर  
 र्तोत्ता नहीं विधा। यह एक बड़ी लीज ली लौर धरने सुभार  
 के लिये धर्म एक निदाना की यधना गते हैं तो यह धरने के  
 लिये बहुत बुरी बात होगी। धार धरने की पर जर्मनी हमना  
 करता है या चीन हिन्दुस्तान पर हमला करता है तो दुनिया के  
 लोगों को बहुत बुरा लगता है। फिर धरने ईसाइयत इस्लाम  
 पर हमला धरती है या इस्लाम हिन्दू-धर्म पर हमला करता है  
 तो यह कौंसे बुरा नहीं है? यह मेरी समझ में नहीं आता। ईसा-  
 मगीह धरने हमरत मुहम्मद धरने के बहुत बड़े परिपोषक हैं लेकिन  
 उनके लिये तो ईसाई धरने मुसलमान धरने की प्रायश्चिता ही  
 क्या है? महापुराणों के उपदेशों का तो मैं दूर से ही रथाद न  
 सकता हूँ जिस तरह कि मुलाय के बगीचे की सुनसू सभी को  
 दूर से ही मिस जाती है। इसी तरह धरने कोई कृष्ण, पातर्गि  
 या वेदव्यास के प्रशंसक हैं तो उन्हें हिन्दू धरने की क्या धरने-  
 कता है, यह मुझे समझ नहीं पड़ता। बहुत से देशों के धरने  
 विभिन्न धर्मों के लोभ आपस में एक ही गार धरने-पीते हैं,  
 आपस में रिश्ता कायम करते हैं और एक-दूसरे के संवत्तान की

मनुष्य मही इच्छता । यही है, यह मही अर्थात् भीज है तथा जो भीज को हमें पीने-पीने करने हुए देगना चाहिए, वही हमारे मनो को हमारे और पीने-पीने हुए हीनो तथा वही हम सब मर्ते कि हम मही माने में एव-हमारे को इच्छता करते हैं । अगरे किमी धर्म को अपने पामिक नियमों के अनुसार अलग बैठ कर माने का आदेश है तो यह धरना काम एकात्म में बैठ कर कर सकते हैं । लेकिन इच्छता धर्म यह नहीं है कि ये अपने को लोगों से महान समझें । इसी तरह अगरे कोई किमी अपने रगत को शुद्धता के लिए अपने अन्दर के रिद्धता में विश्वास करता है तो यह समझ में आता है फिर भी हमें यह भी देगना चाहिए कि एक ही धर्म के अन्दर बहुत-सी जातियां एव देशों के रगत मिले हैं और रगत-शुद्धता का अभिमान किसी भी जगह माने नहीं रखता । इन पामिक मतभेदों को हम जब तक ईमान-दारी से कम नहीं करेंगे तब तक यह काम अधूरा ही रहेगा और धर्म के लिए भविष्य का लोका बाहर ही रह जायेगा ।

धर्म के आपस के भगदों को छोड़ कर अगरे हम देगने हैं तो हमें मालूम पड़ता है कि धर्म के लिए अलग-अलग धर्मों में नहीं बल्कि विज्ञान की भौतिक प्रवृत्ति में है । मैं उम बात से सहमत नहीं हूं कि धर्म को समाजवाद या साम्यवाद ने कोई बड़ा खतरा है । लेकिन मैं इन बातों को जरूरी मानता हूं कि मनुष्य की विज्ञान के रूप में जो बढ़ती हुई शक्ति है मनुष्य पर जो उसका नशा चढ़ता जा रहा है उससे धर्म को अवश्य खतरा है । आज मनुष्य को विज्ञान की बदीलत कुछ शक्ति मिली है, कुछ ज्ञान बढ़ा है एव कुछ उत्पादन करने की शक्ति बढ़ी है तथा सोचने की शक्ति में भी वृद्धि हुई है । अगरे इस बढ़ी हुई

भित्त की मनुष्य रचनात्मक कामों में लगाता है तो मंगार के लिए मनु-मनुष्य बढ़ेगी। लेकिन अगर इस बढ़ी हुई शक्ति को मंगार में नष्ट करने में लगाया और एक-दूसरे से उदात्त हुई तो भविष्य के लिए एक महान् खतरा है। यह खतरा यों है वह बनाने की जग्यत नहीं है। क्योंकि आज समाज का हर एक तजनीतिज्ञ इसी विन्ता से परेमान है। लेकिन इस बात के लिए तो हमें हुए है कि अगर मनुष्य की शक्ति बढ़ती है तो उसमें अभिमान भी बढ़ता है और अगर उसको शक्ति बढ़ती है तो उसके पाशविष्य विचार को भी उत्तेजना मिलती है। अगर बुद्धि बढ़ती है तो मनुष्य उस बुद्धि को दूसरे का शोषण करने के काम लाता है। आज मनुष्य की शक्ति, शक्ति और बुद्धि तीनों बढ़ रही हैं। इसका उपयोग अभिमान, क्रूरता या शोषण पर होगा कि नहीं, यही सवाल है। अभी तक जितने संकेत मिलते हैं उनमें यही मालूम पड़ता है कि मनुष्य ने अपनी बढ़ी हुई शक्ति, शक्ति और बुद्धि का उपयोग बाहरी तरीकों से ही करने का फैसला किया है। जैसे-जैसे विज्ञान में उन्नति होगी जैसे-जैसे मनुष्य की शक्ति, शक्ति और बुद्धि भी बढ़ेगी। इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन इसका उपयोग अधिक अभिमान, क्रूरता और शोषण प्रवृत्ति में हुआ तो यह बाहरी बात होगी और मनुष्य का अस्तित्व समाप्त होने का एक बहुत बड़ा खतरा पैदा हो जायेगा। इसलिए जहां धर्मों को अपनी बुराईयों से खतरा था वहां आज सब धर्मों को एक साथ मनुष्य की बढ़ती हुई शक्ति से खतरा हो गया है। हम यह नहीं चाहते कि यह शक्ति, शक्ति एवं बुद्धि घटे, इसके बढ़ने में ही हमारा फायदा है। फिर भी अगर हम इस शक्ति का उपयोग बाहरी तरीके से



बहुत बढ़ी इज्जत करते हैं, यह बढ़ी अच्छी चीज है तथा इन चीज को हमें धीरे-धीरे बढ़ते हुए देखना चाहिए, तभी हमारे मनों की दगरेँ और दीवारें दूर होंगी तथा तभी हम कह सकेंगे कि हम सही माने में एक-दूसरे की इज्जत करते हैं। अगर किसी धर्म को अपने धार्मिक नियमों के अनुसार अलग बैठ कर खाने का आदेश है तो वह अपना काम एकान्त में बैठ कर कर सकते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि वे अपने को धीरों से महान समझें। इसी तरह अगर कोई फिर्का अपने रक्त की शुद्धता के लिए अपने अन्दर के रिस्तों में विश्वास करता है तो यह समझ में आता है फिर भी हमें यह भी देखना चाहिए कि एक ही धर्म के अन्दर बहुत-सी जातियाँ एवं देशों के रक्त मिले हैं और रक्त-शुद्धता का अभिमान किसी भी जगह माने नहीं रहता। इन धार्मिक मतभेदों को हम जब तक ईमानदारी से कम नहीं करेंगे तब तक यह काम अचूरा ही रहेगा और धर्म के लिए भविष्य का खौफ बाहर ही रह जायेगा।

धर्म के आपस के झगड़ों को छोड़ कर अगर हम देखते हैं तो हमें मालूम पड़ता है कि धर्म के लिए खतरा दूसरे धर्मों में नहीं बल्कि विज्ञान की भौतिक प्रवृत्ति में है। मैं इन बात से सहमत नहीं हूँ कि धर्म को समाजवाद या साम्यवाद से कोई बड़ा खतरा है। लेकिन मैं इन बातों को जरूरी मानता हूँ कि मनुष्य की विज्ञान के रूप में जो बढ़ती हुई शक्ति है मनुष्य पर जो उसका नशा चढ़ता जा रहा है उसने धर्म को अवश्य खतरा है। आज मनुष्य को विज्ञान की बदौलत कुछ शक्ति मिली है, कुछ ज्ञान बढ़ा है एवं कुछ उत्पादन करने की शक्ति बढ़ी है तथा सोचने की शक्ति में भी वृद्धि हुई है। अगर इस बढ़ी हुई

ीर संसार का विनिर्माण भी उपकार नहीं कर सकते । इस-  
 ज्ये संयम, दया, परोपकार, गरजता, दमन, शांति तथा शमा  
 तदि देवी शक्तियों का प्रकटीकरण पढ़ने करने मन ही में  
 रता पड़ता है । क्योंकि गुन्हारा ध्येन गुन्हारी शिवसता में ही  
 दुग हुआ है, गुन्हारा कल्याण गुन्हारे ही चरित्र-निर्माण में  
 नेमित है, गुन्हारा उन्मान और पतन गुन्हारी ही भावनाओं  
 और आचरणों पर अवलम्बित है । गुन्हों अपने प्राय के विधाता  
 ही । शुभ करो, पुन हो जायेना । गुन्हें अनुभ से शुभ को और  
 तथा शुभ से दुःख को और प्रवास करना है । यही गुन्हारा  
 स्व-प्रप है और इसी उदात्त वृत्ति को धारणाने के लिये सभी  
 पमों का बलपूर्वक आग्रह है ।

यह मैं धर्म का अर्थात्म पक्ष कह गया हूँ । सभी पमों ने  
 लोक-नांगल, लोक-कल्याण और लोक-हित को ही अपना एक  
 मात्र उद्देश्य घोषित किया है । आवश्यकता है कि हम अपनेकाव  
 की दृष्टि से अस्पष्ट सत्य का दर्शन करें । दुःख दृष्टि का साक्षा-  
 त्कार करें । विम्व के धर्म उन्हीं के लिये उपादेय और प्राण्य हो  
 सकते हैं जिनकी दृष्टि सम्यक् है, विचार सम्यक् है । मैं विश्वास  
 करता हूँ कि सभी धर्म सापेक्ष दृष्टि से सच्चे हैं, उन्हें झूठा नहीं  
 कहा जा सकता है, हीन नहीं कहा जा सकता है, वह किसी-न-  
 किसी अपेक्षा से इसी परम सत्ता की ओर जाने के लिये आतुर  
 हैं, जिसे धर्म अनेकान्तग्राहक परम सत्य कहा जाता है । गांधी  
 जी ने कहा था कि धमन्धिता और दिव्यदर्शन दोनों प्रलग-  
 प्रलग रूप हैं, उनमें कोई बेल नहीं है । धर्म की आत्मा को

धर्म चाहता है कि मानव की श्रीर मानवीय संसार असुन्दरता धो दी जाये श्रीर मानव आसक्तिहीन हो सके, वा श्रीर विचार का अतिश्रमण कर, मौन की भाषा में वाणी नाद को सुन सके । याद रखिये, मौन ही आत्मा की भाषा व अविरोध प्रवाह हैं । उसका उद्गम प्रमु-साक्षात्कार से प्र होता है । प्रमु स्वरूप हुये विना प्रमु को पाना असम्भव है । अपने स्वरूप में लीन होने के पूर्व अपने स्वरूप का प्रेम होना आवश्यक है । अपने स्वरूप का प्रेम ही ईश्वर में प्रेम है । प्रमु-भक्ति ही जप-विकारों के क्षमन का एक उपाय है । स दुर्वृत्तियों, अनैतिकताओं से अपने को बचाने के लिये सिवम आनन्द भाव से प्रमु के प्रति आत्म समर्पण करने से श्रेष्ठ कोई मार्ग नहीं है । आत्मा ही सच्चा गुरु है । वही हमें प्रतिक्षण सत्य का साक्षात् शिक्षण देता है जिससे मानव अन्तर्मुखी हो सके, शान्ति प्राप्त कर सके, भेद से अभेद की श्रीर, अविद्या से ज्ञान की श्रीर, अन्धकार से प्रकाश की श्रीर, धर्मात्मा की, सर्वोच्च ध्येय-सिद्धि है जिसका शिक्षण सभी धर्मों ने किसी न किसी रूप में संसार को प्रदान किया है ।

सभी धर्मों ने आत्मसमर्पण से अलग्भाव के नष्ट होने का विश्वास किया है । इसी ने मानव का जोर और गुण, पीड़ा तथा सभी कुछ नष्ट हो जाती है । यही ने आत्मानुभूति का पहला आस्वाद प्राप्त होता है । श्रीर आत्मानुभूति की शक्ति ही संसार की सभी गुण शक्तियों से अद्वर है । सकल्प, व्रत, जप, तप, नमाज उपासना और प्रार्थना सब कर्म उगी शक्ति के जाया करने के उपकरण करने माने हैं । उद्देश्य तो स्वस्व का ही है, विना स्वरूप के समझे 'मैं' को पाये, हम अपना

ह वेटा नहीं घेटी है तथा जिस हलवे में धी नहीं यह हलवा ही मिट्टी है। संसार में सब कूठ के सहारे चला करता है। धर्म-धर्म सत्य और असत्य का विवेक किस प्रकार से कर सकते हैं। सन् १९३५ की बात है, इस बीच बहुत से धर्म पैदा थे। जैसे-जैसे प्रोद्योगम बढ़ता गया वैसे-वैसे धर्म भी बढ़ते गये। ये जो नये धर्म बनते हैं इसमें पुरातन अर्थात् पुरानी बातें नहीं रहती हैं लेकिन कभी वे पुरानी ही हो जाती है। मनुष्य का यही भेद है कि नया पुराना कितने कहते हैं ? बुद्धा किसे कहते हैं जो कभी बच्चा होता है, जबानी किसे कहते हैं, जो कभी जाकर नहीं आती। राधास्वामी सम्प्रदाय के त्रिपय में मैं आपसे कुछ कह रहा था। आत्मा को पहचानने के लिये आत्मा को साधने के लिये योग को बहुत बड़ा निद्रांत माना गया है। यह जो वादाम के ऊपर का छिलका होता है यह तो धर्म का व्यवहार है और जो अन्दर का छिपा हुआ होता है, वह योग है। सब धर्मों का सार योग में भरा पड़ा है। भगवान् ने कहा है कि दर असल अन्दर में योग की निद्रि जब तक न हो जाये तब तक कल्याण नहीं होता। मूल चीज तो योग ही है। योग से ही आदमी का विकास होता है, आदमी अपना कल्याण कर सकता है। जिस प्रकार दुनिया के लोगों की नींद एक-सी होती है परन्तु जागने में अन्तर होता है। कोई ज्यादा देर तक सोता है, कोई कम देर तक सोता है, कोई झियिल होता है, कोई फुर्तीला होता है। उसी प्रकार से दुनिया में तमाम धर्म हैं। परन्तु सब धर्मों का भूल अमृत योग है। यही बात है कि बहुत से धर्म प्रवर्तक साधु, सन्यासी, गृहस्थ आदि के रूप में हुये हैं। यहां तक कि बहुत से बाल-ब्रह्मचारी के रूप में भी हुये हैं।

## कल्याण मार्ग धर्म-योग

संसार में कल्याण के लिये धर्म, मे अच्छी कोई नौका नहीं है। वही कल्याणकारी है, उसकी महिमा ग्यारी है। कल्याण के लिये धर्म ही एक अच्छा रास्ता है। आदमी को यह कर्म नहीं भूलना चाहिये कि सन् जितना सच है उतना ही गम्भीर है तथा असत् भी सच ही के सहारे पर चलता है। संसार में आजकल इतने धर्म हो गये हैं कि किसको समझा जाये कि यह धर्म सत्य है तथा यह धर्म असत्य है। यह पहचानना बहुत ही मुश्किल हो गया है। हंस में यह शक्ति होती है कि वह नीस्त्रीर को अलग कर सकता है। लेकिन अगर आप में भी यह शक्ति है वह ताकत है तो आप सत् और असत् तथा धर्म और अधर्म को पहचान सकते हैं। हीरे की परख कैसे हो सकती है। बात तो सही है, लेकिन सही होते हुये भी आधी सही है आधी झूठ। एक कहानी है कि एक आदमी ने कहा कि महाराज मैं खूब भांग पीता हूँ, तो महाराज ने कहा भांग पीना अच्छा नहीं है। आदमी बोल पड़ा कि महाराज आपने क्या कह दिया कि भांग पीना अच्छा नहीं है। अरे जिस बेटे ने भांग नहीं पी, वह बेटा नहीं बेटा है। जिस आदमी ने भांग नहीं पिया वह इन्सान नहीं है। जिस प्रकार से कि जिस हलवा में घी नहीं होता वह हलवा नहीं। उसने एक मसला कहा कि जिस बेटे ने भांग नहीं पी



हमारे चौबीस तीर्थारों में कुछ ऐसे थे कि जिनके सौंड़ों का बच्चे थे चकवती थे। जिसकी योग वृत्तियां केन्द्रित हो गई है वह माया के धीन में जवान की तरह, पानी में कमल की तरह रहेगा। वह दुनिया में चाहे जहाँ रहे, निद्रिया की तरह रहेगा। उस पर संसार की किसी वस्तु का प्रभाव नहीं पड़ेगा। भगवान् कहते हैं कि यदि साधु आंगों वन्द करके नहीं चलता तो वह माया के फेर में पड़ जाता है। जैसे नाक खुली रहेगी तो सुगन्ध और दुर्गन्ध दोनों आर्येंगी। कान खुला रहेगा तो अच्छी तथा खराब दोनों बातें सुनने को मिलेंगी। पति-पतिन के प्रेम से भी बातें सुनने को मिलेंगी तथा इसी प्रकार दुनिया की तमाम बातें हमें सुनने को मिलेंगी। भगवान् कहते हैं कि जो सिद्ध विवेक तथा योग द्वारा चलता है उसके अन्दर दुनिया की बुराईयां कभी नहीं आ सकती। राधास्वामी सम्प्रदाय किस प्रकार बना। राधास्वामी ये बहुत बड़े अफसर थे। वे कोई ऐसी पुस्तक पढ़े जिसके अध्ययन से उन्हें लगा कि श्रुत योग बहुत बड़ा है। अब यह प्रश्न आता है श्रुत योग क्या है। श्रुत योग यह आंगों में किया जाता है। आंगों को मूंद कर धँस जाओ। आंगों में दर्द होने लगे, धड़कन आने लगे, कोई परवाह न करो। लगातार दो-तीन दिन करते रहो। ऐसे धीरे-धीरे जब आप लगातार कई महीने तक करते रहेंगे तो आपकी यह एक आदत हो जायेगी। आंगों में शिजली के समान तज आ जायेगा। जिस प्रकार कि स्विच लगाने से बत्ती जलने लगती है उसी प्रकार आंगों में प्रकाश आ जायेगा। आंग सामने मोटर जा रही है, गाड़ी जा रही है सारा जा रहा है, यदि आप ही इच्छा करती है कि हम इसे मोटर से तोड़ दें तो आप ही कह जायेगा।





( ४८ )

तथा नीचे का भी आपका नहीं है । जब यह स्थिति हो जाये  
 एक काले बिन्दु की कल्पना कीजिये । बहुत जादा जोर  
 दीजिये, धीरे कीजिये । मगर एक भी इच्छा, कल्पना यदि  
 तो सब नष्ट हो जायेगा । एक भी सिद्धि होने को नहीं है ।  
 सब दिल की कम-जोरियां हैं । जगत् तुम्हारे अधीन नहीं है  
 पर धीरे-धीरे वह अधीन हो सकता है । मन को दृढ़ करने  
 भी कुछ समय लगता—है जैसे यदि मोटर सीतना है तो सी  
 सीतने भी कुछ दिन लगता है । उन्ही प्रकार मन को दृढ़ कर  
 में कुछ समय लगता है । जब हमारा मन पक्का हो जायेगा  
 आप सर्वांत मुग्धता चाहेंगे तो आप ही सर्वांत मुग्ध हो जायेंगे ।  
 आपकी जो कुछ इच्छा, मनोकामना टीकी, वह सब हो  
 ही रहती । यह नून योग है । मनुष्य भावना का भण्डार  
 जब उसी पक्ष परत मिल जाता है तो वह सबको तभी  
 कि नहीं रखता मगर अन्त में, दूसरा रास्ता खोज लेता  
 है । मनुष्य को सादरी का पक्ष ही रहता है जो न  
 पक्ष, मोड़, बाध, बाधित हो सब ही वह धीरे-धीरे सब  
 सब पक्ष-धर्म एक मनुष्य के पास सब होकर रहता  
 मनुष्य को सबके सबके मनुष्य के लिये सब सब है । मनुष्य  
 न सबके सबके मनुष्य के लिये सब सब है । मनुष्य  
 न सबके सबके मनुष्य के लिये सब सब है । मनुष्य  
 न सबके सबके मनुष्य के लिये सब सब है । मनुष्य



तथा नीचे का भी आपका नहीं है । जब वह स्थिति हो जाये तो एक काले बिन्दु की कल्पना कीजिये । बहुत ज्यादा जोर मत दीजिये, धीरे कीजिये । मगर एक भी इच्छा, कल्पना यदि रही तो सब नष्ट हो जायेगा । एक भी सिद्धि होने को नहीं है । यह सब दिल की कमजोरियाँ हैं । जगत् तुम्हारे अधीन नहीं है । पर धीरे-धीरे वह अधीन हो सकता है । मन को ट्राई करने में भी कुछ समय लगता—है जैसे यदि मोटर सीखना है तो सीखते सीखते भी कुछ दिन लगता है । उसी प्रकार मन को ट्राई करने में कुछ समय लगता है । जब हमारा मन पक्का हो जायेगा तो आप संगीत सुनना चाहेंगे तो आपको संगीत सुनाई देगा । अथवा आपको जो कुछ इच्छा, मनोकामना होंगी, वह सफल होकर ही रहेगी । यह श्रुत योग है । अनुप्य भावना का भण्डार है । जब उसको एक रास्ता मिल जाता है तो वह समझते लगता है कि यही रास्ता सबसे अच्छा है, दूसरा रास्ता रास्ता ही नहीं है । आनन्द उसी आदमी को प्राप्त हो सकता है जो काम, श्रेय, मोह, माया आदि को त्याग दे तथा व्याभिचारों से दूर रहे । एक आदमी एक महात्मा के पास गया और कहा कि महाराज हमारे अन्दर तनाम व्याभिचार भरे पड़े हैं । महात्मा ने कहा उनको और बढ़ाओ । उन्होंने उसको एक ऐसा आसन दत्ता दिया जिससे कि उसके सब व्याभिचारों का लोप हो गया । कुछे आदमी ऐसे होते हैं, जिनको व्यापार में आनन्द आता है ।



जाना जा रहा है। और कोई ब्यापार, ब्यापार ही नहीं।  
कहा है वह तो चिन्तामणि और सब गड़बड़। कुछ नष्ट नष्ट  
ही कि हम जो कुछ कहते हैं, हमारे जो कुछ ग्रन्थ हैं, वही सब  
आप सब समझें। उद्वेगवर्ती विचारवर्ती के रूप में, नष्ट नष्ट  
के कर्मों पर, अर्थों पर की चारों पहल कर सकता है। विवेक  
दुष्टि के बिना इसका उदा नहीं लगाया जा सकता। इसलिए  
ग्रन्थक आदमी को चाहिये कि वह स्वयं को और सब  
को छोड़कर सब का मार्ग बननाये।

## धार्मिक सम्प्रदायों में एरम-पूज्य

धर्म-मन्त्रालय, धर्म-सहिष्णुता का एक विविध धार्मिक सम-  
 ायी में एरम-पूज्य का धर्म-भारत में प्रारम्भ ही ही विकसित  
 होना प्रारम्भ है । एक वर्ष दिन बढ़ाया 'धर्म-पूज्य'—एक नवंबर  
 के एक श्रद्धियों की धर्मों है—की भाव और एरम के नाम  
 प्रसार के लिये में एक ही एरम का धर्म कर रहे हैं । इसी एरम  
 मोक्ष है कि मैं भारत के एक महावीरता धर्मों में के लिये धर्म  
 पर विश्वास कर रहा है कि जिन धर्मों में धर्म-धार्मिक धर्मों  
 को धर्म-धर्मों का नाम दिया है । और एरम-पूज्य धर्मों  
 विद्वान् विद्वान् सब धर्मों का ही एरम धर्म-धर्मों धर्मों  
 धर्म का धर्म-धर्मों विद्वान् ही धर्मों के धर्म-धर्मों है । धर्मों  
 धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों के धर्म धर्मों में, धर्म-धर्मों धर्मों  
 में और धर्म-धर्मों के धर्म-धर्मों धर्मों में धर्म-धर्मों  
 धर्म का धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों—एक धर्मों धर्मों धर्मों  
 ही धर्मों धर्मों और धर्मों का नाम धर्म धर्मों है । धर्म-धर्म-  
 धर्मों का नाम ही धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों है ।

एक धर्मों धर्मों है जहां धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों ।  
 धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों, धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों  
 धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों धर्मों

प्रभावित हुई। पूर्व के तीर्थंकरों, दक्षिण के भाग  
उत्तर के संतो ने इस देश की संस्कृति को भूना बना

यद्यपि आज संगठन का युग है किन्तु अर्थ एवं धर्म  
पार के आधार पर खड़े किये गए संगठन—  
लिए लाभदायक सिद्ध नहीं हो रहे हैं। संयुक्तराष्ट्र  
राष्ट्रीय संगठन संसार की शान्ति का पूर्ण लक्ष्य  
नहीं दे पा रहा और पंचशील तथा वांडुंग सम्मेलन  
रिक्त अविश्वास को नहीं धो पा रहे—उसका कारण  
त्व एवं सह-जीवन की भावनाओं को इन संगठनों में  
दिया गया किन्तु पीछे जिस आत्मनिष्ठा की एवं  
आवश्यकता होती है उसकी महत्त्व न दिया जा सका  
कारण है कि धर्म की इस समता, सह अस्तित्व शक्ति  
को राजनीतिक संगठनों ने धर्म से उधार तो लिया किन्तु  
आत्मनिष्ठ न बना सके। वर्ग संघर्ष, प्रतिद्वंद्विता और  
को यह संगठन मिटा न सके।

इसीलिये धर्म के आधार पर एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय  
को आवश्यकता हम महसूस करते हैं—जिसके द्वारा  
समाज के आपसी संबंधों को आत्मनिष्ठ बनाया  
राजनैतिक स्तर पर यूनेस्को जिस सांस्कृतिक भाव को  
कर रहा है—इसकी पूर्ति इस धार्मिक संगठन से की  
हमारा विश्वास है कि अब वह समय आ गया है जब  
मानने वाले लोग अनुन्नत राष्ट्रों की सहायता के लिए  
मानस तैयार करें, पारस्परिक संघर्षों को धार्मिक  
धो दें। भाषा व साम्प्रदायिक संघर्षों को मिटाने के लिए  
हो जायें और तमाम पराधीन राष्ट्रों को स्वाधीन  
सहायक बनें, ऐटम-स्पर्धा को नियंत्रित करने के लिए

पान बलाएँ, नमोस्ते के पुननिर्माणपूर्ण पंक्तिक सिद्धांतों  
 प्या ने स्थापित करें—जिनसे मानव-मनास की  
 तन्वीय समस्या का समाधान हो सके और जीवन के  
 लक्ष्यों को अनुभव हो सके। जगत की समस्याओं को  
 स्तर में हल करने के बहुत प्रयास हो चुके हैं, पर  
 भी ऐसा है कि जगत की सब समस्याओं को धार्मिक  
 अतिरिक्त बसोठियों में समा जाय और उनका समाधान  
 । इसके लिये संसार के विभिन्न धर्मों के एक नया  
 िष्टी आवश्यकता है ।

होता है कि जब धर्म का मुत्तारवादी विसी धर्म के  
 बड़ी धरणा ने यह कहता है कि—मेरे धर्म को कुछ  
 भी, शास्त्र और तत्त्वज्ञान को स्वीकार नहीं करता,  
 तो है कि उगर्ती दौड़िक अस्मिता इतनी कम हो  
 उ धर्म जैसे धर्मन की, धर्मत मानने को ही संसार नहीं  
 तने अधिकांश आज के मुत्तारवादी की विमंगति क्या हो  
 ?

धार्मिकों के सामने जो सबसे बड़ी समस्या है वह  
 कता की तो है ही, किन्तु उनमें बड़ी बात धार्मिक  
 सुरक्षित करने की भी है। जिस तरह संसार में कुछ  
 िष्टी लोग धर्म को कट्टरता का रूप देकर उसे अनुन्दर  
 और अनुभ की ओर डकेल देते हैं—उसके निराकरण  
 भी समस्या हमारे सामने है। आज हम अपने  
 र जिन अंधकार को देख रहे हैं—उसे दूर करने का  
 में और विज्ञान और विज्ञान की धर्म का रूप नहीं दे  
 व तक हमारी समस्या किसी भी तरह मुलक नहीं



धर्म की उपयोगिता है ।

धर्म का अर्थ मन्थन

मनुष्य की अपनी मान्यता अथवा आत्म श्रद्धा ही धर्मः परिपूर्ण अर्थ नहीं बन सकती, हमारा विविधत सत्य ही अति तत्व है. यह भी अमंगल है । मानव ने आग्रह वश धर्म पर अर्थ के अन्वय और परिभाषाओं के ढेर लगा दिए हैं, अब भी धर्म की ७०० परिभाषाएं अपना-अपना अस्तित्व रखती हैं, प्रत्येक धर्म परस्पर में एक दूसरे को अपूर्ण और स्वयं को पूर्ण मानने का हठ पकड़े हुए हैं, यही कारण है—स्वकल्पित अर्थ के अर्थ के कारण प्रत्येक धर्मों ने जगत के सभी धर्मों से अवांछित व्यवहार किया है और कहीं-कहीं यह भावना इतनी उद्बुद्ध हो गई, जगत के सभी धर्मों का नाश करके स्वधर्म की सत्य प्रमाणित करने के लिये विध्वंशलीला के अकाण्ड ताड़व घटित हो गये हैं । यहां यह याद रखना चाहिए कि जगत में अनेक धर्म हैं, उनका अपना-अपना सापेक्ष दृष्टि से महत्व है, उपयोगिता और आवश्यकता है । सभी धर्म दृष्टि विन्दु है अहिंसा के साधनों से सत्य की शोध के हिमायती हैं किन्तु उनका योग्यता, सामर्थ्य, दृष्टिकोण पृथक २ है सभी धर्मों का न करके मानव जाति को एक बाड़े में बन्द करना कभी भी हितकारक नहीं हो सकता है । सम्भव है अपकर्ष का ही कारण हो और न ही किसी व्यक्ति को किसी तत्व का नाश करने का अधिकार है । पिछली शताब्दियों में राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, जगद्गुरु, कल्पयुगियस लाओत्से, इसा मुहम्मद जैसे अवतार तीर्थंकर तथागत तथा परमेश्वरों का मानव दर्शन कर चुका

है ये महामानव के और ये मानवता के उन्नत प्रहरी और  
 आत्मा के दिव्य संदेश ग्राहक हैं । इन सबको धर्म प्रवर्तक कहा  
 जाता है क्योंकि इन्होंने अपने जीवन में धार्मिक स्वभाव का  
 विराग किया था अपनी धार्मिक प्रतिकूल प्रवृत्तियों को मरने के  
 प्रतिकूल और अभिलषित पाण्डित्य शक्ति अनुकूलताओं को समस्त  
 विश्व के लिये हितवाह माना था । 'धार्मिकः प्रतिकूलानि परेषाम्  
 समाचरेत्' यही इनका सार था । धर्म धर्म जैसे व्यापक शब्द  
 को हम किसी भीमा धर्मवा श्रेय श्रेय के पक्ष में नहीं समझ  
 सकते, धर्म का धर्म मूल में स्वभाव है, मदान्तर है, सृष्टि में  
 धर्म है, और सत्यता में सर्वव्यापक है, कला और साहित्य के  
 क्षेत्र में श्रेय और धर्ममूल्य है, मनो में सर्वोच्च तथा मानव  
 शक्तियों में स्वस्वता है, धर्म के मूल धर्म है, तात्पर्य एक ही  
 है कि चेतन्य का धर्म चेतन्य है जिसे हम धर्म स्वभाव कह  
 सकते हैं । भगवान् महावीर वरधुमहाधी धर्मो, बुद्ध, धर्मिण  
 धर्म, वैदिक निर्धर्मिकों धर्म कहकर तथा संतों ने धर्म की साह-  
 जिक वृत्ति, मर्य संशुद्धि, प्राध्यात्मिक उत्कर्ष आत्म उन्नतता  
 तथा प्राध्यात्मिक अनुभव कह पर इसी लक्षण का बलपूर्वक  
 समर्थन किया है ।

### धर्म और सिद्धान्त

धार्मिक स्वभाव के विकास में सभी तत्त्ववृत्तियों एवं धर्म के  
 सिद्धान्त बताये गये हैं । धर्म स्वरूप को सुस्पष्ट करने के लिये  
 जिन धार्मिक दोषों का साक्षात्कार किया गया है, वह हिंसा  
 प्रसक्त्य, अनाधिकार चेट्टा, व्याभिचार तथा संग्रहवृत्ति प्रादि ही









जाने में गुणवत् नहीं कर सकते—पर इस समय इसका मत ही समझाया जाय।

३. भगवान् महावीर की देशना के सम्बन्ध में कहे जाय।

बहूँ के पीछे भी परम्परा है। दिगम्बर सम्प्रदाय के लोग दिग्गमिणी को स्वीकार करके कहते हैं कि उनमें में देव विषय सब अपने मतों को समझ लेते हैं। ज्येताम्बर व द्वारा उपदेश को स्वीकार करते हैं। पर इन मान्यता भिन्नता में कोई हानि नहीं है। जहाँ प्रेम का अतिरेक होता जहाँ मरणा का अतिरेक होता है—उमें गुनने गुनने प्रायश्चित्त नहीं है। उमें वाणी के माध्यम की जरूरत नहीं भगवान् यौनते थे वाणी का अविशय था। महारत से नमस्को-वाणी ने या ध्वनि से आप तमाम मतभेद भूलकर उन देव का ध्यान करिये। उन देशना को नमस्कारिये। इसी में कल्याण है।

धर्म के मतभेद भी मिट सकते हैं—जबकि हम उसी आधार बिन्दु को बदल दें। हमारे समन्वय की पृष्ठ भूमि होजाय।

दूध मीठा होने पर भी मत भिन्न होते हैं।  
का भगड़ा है यह भगड़ा मिट सकता है।  
लिये भी सहिष्णुता चाहिये।

महावीर स्वामी की पहली देशना यह

ओ जैनियों ! अहिंसा निष्ठ भी जै  
गणना बढ़ाने की दृष्टि से आप यह कहें  
का ध्यान वही करते हैं—जिन्हें











## लोभ पाप का नाश

कहिये करता है कि मैं इन्सानों यदि मुन्हासों मोक्षध्वज  
दारा ध्यान प्रभु में हो ताका है तो मुन प्रभुकर धारण में धार  
का नाश ।

एक उद्धरण भाषण में कहा है—

मिन्हासी प्रक के उद्धरण,

दृष्टीही ध्यान हो जाता ।

न कर्तवी नाथ सकल न,

ने वेदा धार हो ताका ॥

चित्तन मुन्हास धार है में । मुन्हास, मुन्हासी मोक्षध्वज

मिन्हासी न हो । धनापटी न हो । मुन्हास धार धारण की

वस्तुओं पर नहीं होता तो मुन्हास वेदा धार हो जाता ।

एक भाषण में फिर कहा है—

मोक्षध्वज की मुदा तक मिन्हाई है ।

धारण हृम सब समझो तो, मोक्षध्वज ही मुन्हाई है ।

मोक्षध्वज की पट्टेच मुदा तक है । इस निवे मोक्षध्वज ही

मुदा धीर प्रेम स्वयं भगवान है ।

प्रेम की शक्ति को जागृत करो । अन्य शक्ति को जगाने

सुरों ने ऋषि के पास जाना स्वीकार किया। कच्छ की खाड़ी के पार अगस्त्य मुनि का आश्रम था—सुर गये और प्रार्थना की कि—

ऋषिराज ! यदि आप कृपा करके समुद्र का जल पी जायें तो राक्षसों को रहने की जगह नहीं मिलेगी और हम उन्हें मार डालेंगे। वैसे हम कमजोर नहीं हैं पर यदि आप उनके रहने का स्थान मिटा देंगे तो हम मुखी हो जायेंगे।

ऋषि ने कहा हमारा सर्वस्व यदि किसी की रक्षा में काम आ सके तो बड़ी खुशी की बात है। पर लाखों माइल का समुद्र पीना कोई आसान नहीं। फिर भी प्रयत्न करूँगा।

अगस्त्य मुनि ने तीन चुल्लू में सारा समुद्र पी डाला। मगर मच्छ और कच्छ सब बाहर आ गये। फिर क्या था असुरों पर देवों की विजय ही गई।

बुद्धिवादी के लोग कहेंगे—बड़ा भारी गपोड़ा आपने सबके सामने रख दिया। दो लाख मील का समुद्र पिया कैसे गया ?

पुराणों को लिखने वाला व्यास कोई साधारण व्यक्ति नहीं था। बड़ा पंडित था—इसमें तथ्य भरा हुआ है मैं उनमें से नहीं हूँ जो गपोड़ा कह कर छोड़ दें। हम तथ्य को निकालते हैं।

देवा सुर लडे थे। आज भी देवा सुर लड़ रहे हैं। आपमें तन, सत्य, शांति आदि गुण देवता हैं। क्रोध, मान माया, लोभ आदि अनेक अवगुण जो आपमें भरे पड़े हैं—वे असुर हैं—राक्षस हैं।



( ६२ )

महने का तात्पर्य यह कि वृष्णा का समुद्र आकाश से भी ज्यादा विनाश है। यह इतना बड़ा वृष्णा का समुद्र मनुष्य के छोटे से हृदय में रहता है। वही समुद्र में क्रोध, मान, माया आदि दुर्गुण रूप राक्षस छिपे रहते हैं। इस समुद्र को शांत करने के लिये आत्मा रूप अगम्य ऋषि से प्रार्थना करो। व तीन चुल्लु में इस समुद्र का शोषण कर देना—वे तीन वृक्ष हैं— दमन और चरित्र ।

आत्मिक संयम, शारीरिक संयम और मानसिक संयम तुम्हारे देवता की विजय होगी। तुम में दया कहेगा और क्रादुर्भाव होगा। आनंद का जोत फूट पड़ेगा। और तुम इस आत्म कल्याण करने में नमथं बनोगे।

---









में यदा मनोवैज्ञानिक माना जाता है। माइकोलार्जी का विवेक इसी मंत्रापुराण की धेनू है—परन्तु यदा आपने कभी इसका न समझा कि हमारे भगवती रूप में इस मनोविज्ञान के पिछे इन किनना गहन है।

भगवती मून में इन्द्रियां ५ मानी गई है। पांच इन्द्रियों के २३ विषय माने जाते हैं। यह बात जैन का बचवा बचवा जानता है। हमारे यहां बचपन से ही यह विज्ञान भिन्ना दिया जाता है। छह हजार वर्ष पहले ही हमारे यहां इस मनोविज्ञान की पूर्ण श्रारया की जा चुकी है।

कान से हम सुनते हैं। सुनने की ध्वनि दो प्रकार की होती है। कान और अकाल, नाद गुञ्जन या ध्वनि केवल १-२ प्रकार की नहीं होती। हम केवल जीव शब्द अजीव शब्द और मिथ शब्द कहकर श्रोत्रेन्द्रिय के विषय बतला देते हैं। माना कि शब्द तीन ही प्रकार से उत्पन्न होकर ध्वनित होते हैं। पर—ध्वनियों का कोई प्यार नहीं। प्रत्येक प्राणी की अपनी एक अलग ध्वनि होती है। वीणा के तारों में निराली स्वर लहरी बहती है और सिंह का गर्जन अनोखा गर्जन उत्पन्न कर देता है। ध्वनि विज्ञान में ही सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया जा सकता है।

एक तिनको देखिये और देखिये कि तिनको प्रकार, असंख्य हैं, आप उनके चित्र लेते जाइये और उन्हें समझते जाइये—पार न पाइयेगा। जिन्दगी बीत जायेगी।

चक्षु इन्द्रिय के विषय पर विचार करिये। आप, काला, पीला श्वेत आदि ५ रंग बतला देंगे। अधिक कहने वाले इन्द्र धनुष के सात रंग कह देंगे। पर क्या आपके रंगों के इतने से से कथन से संतोष हो जायेगा। चलिये, उद्यान में चलिये और



( ३८ )

गुरु चीनी, दूध, चना, और गेहूं, में प्रथम प्रथम स्थिति होती है। मसूर, पहाड़ और कुरा के नामक में प्रथम स्थिति होता है। इहाँ तक कहीं अनेक भेद स्वाद के पायेगे।

सर्वाभिव्यक्ति के विषय है। पर इनके अंतरंग भेद कितने। एक कुरा का सर्वाभिव्यक्ति आप इस का क्या वर्गीकरण करेंगे। एक कुरा को गोद में लेकर जो सर्वाभिव्यक्ति आप ऐसे है उसका क्या नाम देंगे। सर्वाभिव्यक्ति के कितने प्रकार हैं। उन्हें हम उल्लिखित द्वारा नहीं बता सकते इनका वास्तव्य निकाला नहीं जा सकता।

तो हमारा कहने का तात्पर्य यह है कि केवल २३ विभक्तियाँ कह देने से ही का नहीं चरेगा। २३ विषय मनमाने ही वागी और उनके अंतर्गत भेद अनुभव का विषय है।

इन पाँच इंद्रियों में आंख और कान कामेन्द्रियाँ हैं। जीभ, जिह्वा और स्पर्श ये ३ भौतिकीय हैं।

आंख की दो अपने विषय को बिना स्वयं किये ही अनुभव कर लेती है और जीभ तीन वस्तु से स्वयं किये बिना ज्ञान नहीं कर सकती। आप किसी रस को आंख से लगा दोड़िये शिथिल हो जायगा। पर किसी वस्तु को जिह्वा पर लगाये बिना स्वाद का अनुभव नहीं कर सकते।

मान इन ५ इंद्रियों की उपयोग करिये उपयोग नहीं।

इन्द्रियों का विवेचन आपने सुना। क्या हम प्रकृतों इंद्रियों को उपयोग में न हों। क्या हम कानों में किये सुनते। क्या हम आंखों पर पट्टी बांधके। क्या हम नाक बंद करदें। नहीं इन की आवश्यक नहीं। इंद्रियाँ स्वयं कुछ नहीं करती। इनके माध्यम हमारा मन जुड़ा रहता है मन के ही योग से ही इंद्रियों द्वारा हमारी दुर्बला ही









कृष्ण कोई जेने धर्म व्यक्त नहीं थे । महा योगिगज थे । लोगो ने उन्हें यतमान में भगवान माना है और कुछ लोग उन्हें भविष्य में भगवान मानते हैं ।

प्रवाह को रोकने में सक्ता नहीं इसलिए महापुरुष उसे मोड़ दे देते हैं ।

पांडवों ने तुम्बी सहर्ष स्वीकार की । भगवान की तुम्बी को उन्होंने स्वयं भगवान गमभा । ६६ तीर्थों में स्नान करने गये । अचंकिा में भी उन्हें श्राना पड़ा होगा । क्योंकि वह भी तीर्थ स्थान है । मध तीर्थों में उन्होंने स्नान किया और तुम्बी को तो ३—३ बार स्नान कराया । भगवान की भेंट जो टहरी ।

२-४ वर्षों में पांडव लौट कर आ गये । भगवान कृष्ण वड़े प्रमन्न हुए । कहा—पांडवों मुझे बड़ी खुशी है तुमने अपने पापों को धो दिया । पांडव बोले मध आपकी कृपा है ।

‘ठीक है ।’ भगवान ने सोचा और कहा— मेरी अमानत कहाँ है ? पांडवों ने कहा महाराज आपकी तुम्बी बड़ी सावधानी से रखी है । उसे ६६ तीर्थों में ३-३ ४-४ बार स्नान कराया है ।

कृष्ण ने तुम्बी ली और एक व्यक्ति को कहा इसे पीस कर लाओ । चूर्ण आया । कृष्ण ने एक चूटकी स्वयं ले कर मुह में डाली । तीर्थ गया का प्रसाद था । सबको एक एक चूटकी दी । पांडवों को भी प्रसाद दिया गया । सबने मुह में डाला ।

कृष्ण इन्द्रिय विजय में समर्थ थे । उन्होंने तुम्बी के चूर्ण को हजम कर लिया । पर अन्य लोग उसकी कड़वाहट को बर्दाश्त न कर सके । किसी ने रुमाल में थुका, किसी ने बाहर







भद्रराज ने कहा था है :—

'कोहो पीर पनामेद ।'

शोध प्रेम का सबसे बड़ा दुःख है । शोध धाम-नाम की प्राप्ति को भी या जाता है ।

शोध में मानसिक, पारोदिक और आध्यात्मिक मोटमें नष्ट हो जाता है । शोध के दावानल में सर्वस्व स्वाहा हो जाता है ।

शोध का मन्नाट बड़ा गुनी जन था—प्रजा को उपहार बांटता था । मिदमा, राजनीति और बीजा में उमड़ी बराबरी करने वाला कोई नहीं था । —पर उनमें एक शोध का अवगुण था । उनका शोध इनना भयानक हो जाता था कि वह दुनिया का टगमगा देता था । शोध में वह मायात यम का अवतार बन जाता था । क्या मजात है कि कोई पूं पनट भी कर ले ।

उनकी राज रानियाँ—राज महीपियाँ राजा के शोध के म दे परेजान थी । शोधी से कौन प्रेम करे । शोध रहे यहाँ प्रेम का क्या काम ?

वे शोधी लोग गहार हैं—जिन्होंने घरों में धाग लगाकर सारे परिवार की मुग और भाति छीन ली ।

राजा के शोध के रोग का प्रतिकार रानियों के पाम नहीं था—मानन्तों के पाम नहीं था—मव दुःखी थे ।

मनुष्य अपने प्रयत्नों में कोई कमर नहीं रखता । पर जब यह विवश हो जाता है—तो वह फकीरो, मन्तों, महात्माओं की शरण में जाना है । दुनिया बड़ी मननवी है ।

हिमी की हिम्मत नहीं होती थी वह कह दे—राना से—कि अप शोध न करे । जो कहता वही—मृत्यु का मेहमान बन जाता ।



जैसे मरती चरित्रता, धर्मकी जीवन्मता का समाप्त भाग। उसे वि-मन हुआ। जीवन्मता समाप्त। विवेक जागा। नहीं क्रोध होता है—मन में विचार और विमन समाप्त जाता है।

२-४ मित्रित्व में राधा सम्मिल हुआ। उमने चरित्र की दशा भी बदली। उमने मोचा क्रोध के कारण मेरी यह दशा ही जाती है।

देवान ही गया राधा। अपने धार पर जानत भेजने सगा। तुम्हारे की तुम्हारे समझने में तुम्हारे निकम जाती है।

राज कीवन्मता या मिट्टी गाने की जिगकी आदत हो—उमने जरा बाहर निकले की कह दीजिये। जब यह बाहर दूकेगा तो उम म मूम हो जाएगा कि प्रतना काना पदार्थ मेरे पेट में जा रहा है।

तुम्हारी तुम्हारे की नगनता तुम्हारे मानने नहीं जाती। इसी से तुम तुम्हारे करते हो।

एक मी वरु का फकीर टायरी में निय गया है—

यदि तुम्हें सिन्हा करने का शोक है—शुनी से करो। पर, वह अपने तुम्हारे की होनी चाहिये।

यदि तुम्हें प्रयत्न करने का शोक है तो खुनी से करो—पर वह अपने नहीं दूसरे के गुणों की प्रयत्न करो।

तुम्हारी अत्मा में ब्रह्मत्व जाग जायेगा। मानसिक दासता को समझो। प्रभु के चिन्तवन में मन लगाओ।

क्रोध का इतिहास भयंकर है। युद्ध—खून सब क्रोध के परिणाम हैं। बड़ाई का सीत आपने देखा है। जब क्रोध घबक उठता है—तब मनुष्य राक्षस बन जाता है। क्रोध शान्ति का शत्रु है।

हम जावरा हुसेन टेररी पर भूतों का साण्डव देवने गये थे।

में तो भूत नहीं मिला । मूननियां अवश्य मिलीं । पर वे स्वयं  
इन्तान थीं ।

जब क्रोध प्रवेश कर जाता है तब मनुष्य स्वयं भूत बन जाते  
हैं ।

मन सबसे बड़ा भूत है । इस मन के भूत पर सवार हो  
जाइये । —फिर आप स्वयं आत्म विजयी बन जायेंगे । आप  
परमात्मा के रूप हैं । क्रोध होता है जहाँ वहाँ प्यार नहीं होता ।  
तो जहाँ सच्चा प्यार होता है—सच्चा प्रेम होता है—वहाँ  
क्रोध नहीं फटक पाता ।

आप प्रेम के प्याले को पीकर संसार में शान्ति का समुद्र  
सहरा दो ।





# वैदिक-धर्म

भारतों को बहुरी !

आज मैं आर्य समाजों में विचार के सम्बन्ध में विचार रखना चाहता हूँ ।

आज मैं आर्य समाजों को सीख रहा हूँ—उसमें क्या था क्या है कि—

हे इन्द्राजी ! तुम २४ ऋषियों में वेदों में प्रभु का स्मरण किया करोगे तो तुम्हारी आत्मा में परमानन्द की अनुभूति होगी । परमानन्द की प्राप्ति मनुष्य का सर्वोत्तम ध्येय है । परमानन्द की प्राप्ति के लिये ही सय धर्मों का विधान है ।

मैं आज वैदिक धर्म के विषय में कहने जा रहा हूँ । वैदिक धर्म संसार की चार मुख्य विचार धाराओं में से एक है । संसार की चार मुख्य विचारधाराएँ हैं—

(१) हिन्दू, (२) बौद्ध, (३) ईसाई और (४) इस्लाम ।

अधिकांश लोग इनमें समाविष्ट हो जाते हैं—

भारत वर्ष में ३ प्रमुख विचार धाराएँ हैं—१-वैदिक २-जैन और ३-बौद्ध ।

वैदिक धर्म का मुख्य उद्देश्य आत्मा के आनन्द की अपेक्षा राष्ट्र की एकता कायम रखने का विशेष है ।

धर्म का प्रादुर्भाव और उत्थान भारत में ही क्यों हुआ है ?







... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..



स्वामय्य जीः राजीवर्षों ने ज्ञान द्वारा मूर्ति का माय  
भाषण ।

राजर्षियों ने—कल्प, त्रिधा और सून बनाये । सून भी  
तीन प्रकार के—स्रोत सून, धर्म सून और गृहसून ।

स्रोत सून में बड़े-बड़े राज करते तावों का वर्णन है उन  
राजाओं और देश नेताओं का वर्णन स्रोत सून में भरा पड़ा है ।

स्रोत सून के रचयितन-आप स्वाम्य वाधायन, आदि हुए ।

धर्म सून के रचयिता भीतम आदि हुए । जिन्होंने ब्रह्मचर्य  
अपरिश्रम, प्रायश्चित्त दान, दया आदि का विधान शास्त्र रचा ।

गृह सून संस्कारों के निहुर देते हैं । शारीरिक संस्कार १६  
आप लोग १६ मानते हैं । २२ मासिक संस्कार । पुंसवन, उप-  
नयन आदि अन्त्येष्टि तक शारीरिक संस्कार ।

मासिक संस्कारों में—दिव पितृ आचार्य अतिथि आदि की  
पूजा का विधान है ।

उपनिषदों के आधार से दार्शनिक लोग ज्ञान को तर्क से  
सिद्ध करते हैं । ब्रह्म है—और कुछ नहीं । इस प्रकार वादरायण  
उसका संकलन करते हैं । अद्वैत वाद की सिद्धि की जाती है ।

मृत्युवत यजाता है एक-एक दिन सब धर्मों पर कहूंगा । हम क्या म विश्वास देते हैं । यही सबसे बड़ा है ।

'सत्यं वद', धर्मं चर' 'स्वाध्यायान् न प्रमदितव्यम्' ।

आदि वेद वाक्यों में सबसे बड़ी बात है—अतिथि की जा ।

मातृदेवो भव, पितृदेवा भव,  
आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव ।

मां-बाप और आचार्य का सम्मान करना स्वर्ग वश भी हो जाता है । उनका हम पर ऋण भी होता है । पर अतिथि का न सबसे अधिक मान दिया गया है इसमें हमारी संस्कृति की एक महान विशेषता धन्तनिहिन है । आज तो अतिथि को देखकर तने भयभीत होते हैं—गोया कोई भूत प्रेत आगया हो । यही हमारी दारिद्र्य का सात है ।

अतिथि सत्कार की एक कहानी याद आ गई —

योगिराज कृष्ण सन्धि सन्देश लेकर द्रुत बनकर—पांडवों की और से कौरवों की राजसभा में जाते हैं । और प्रस्ताव करते हैं—हे दुर्योधन यद्यपि पांडव आद्य राज्य के अधिकारी हैं—फिर भी-यदि तुम उनका सम्मान रखने के लिये केवल ५ ग्राम ही दे दोगे तो वे सन्तोष कर लेंगे ।

दुर्योधन स्वार्थान्वया— । अभिमान में अन्धा हो रहा था । उसने कहा—

धरे ग्वाले ! गार्गे चराता चराकर राजनीति में उत्तर आया तू क्या जाने राजनीति को । एक सूच्यम भी मैं पाण्डवों को नहीं दे सकता ।

श्री कृष्ण ! योगिराज कृष्ण ! योगिराज कृष्ण ! वैदिक



विदुर पत्नी अन्दर गई। कुछ केले पड़े थे। उसने सोचा भगवान की सेवा में यही अर्पण कर दूँ। ब्राह्मणी ने केले की फलियां छील कर देने का उपक्रम किया। भाव विह्वल ब्राह्मणी भूल गई कि मैं क्या कर रही हूँ। वह फलियां फेंक कर भगवान को छिलके खिला रही है। प्रेम के प्यासे कृष्ण को भी मालूम नहीं कि वह भक्त का प्रसाद कौन है। उसमें तो अपूर्व रस था।

हमारे मेहमानों को आचार-मुरव्ये और मिठाइयों की शिकायत रहती है। वहाँ कोई शिकायत नहीं थी —

१ केला समाप्त हुआ। दूसरा आया। तीसरा आया। फलियां फेंक दी गईं छिलके खिलाये गये विदुर कूटिया में आ रहे हैं। उनकी नजर कृष्ण और ब्राह्मणी के अतिथि सत्कार पर पड़ी। वह बोला—धो मूर्ख ! यह क्या कर रही है ? भगवान को छिलके खिला रही है।" ब्राह्मणी होश में आई।

विदुर ने फलियाँ देनी शुरू की। कृष्ण बोले विदुर अब तो पेट भर गया।

भाप अतिथि सत्कार की इस तस्वीर की ओर देखा। यह है हमारी सम्यता। खाने और खिलाने में आनन्द की पराकाष्ठा इसे कहते हैं।

हिन्दुस्तान के समस्त दर्शन और वैदिक धर्म एक परम सत्ता की ओर ले जाता है। यह बताता है कि वह अपना बर्तन कैसे करे। पुत्र और पुत्री को समान समझे। नारी जाति का सम्मान करे।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,  
रमन्ते तत्र देवता ।

यज्ञ का काम नारी के बिना नहीं हो सकता। वैदिक

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

यह वेद मणों है—और

‘उत्साह भग्न धोवन मुक्त सार ।’

ये हेम चन्द्राचार्य का श्रवण है । उनका उद्देश्य है । सार का तब रूपन करते हैं ।

सकल शिष्यरज्य में एक जगत् वर्णन आता है—

मकराचार्य गंगा स्नान करने गये । स्नान करके वापिस आ रहे थे । एक सफ़ेदी पुल को पार करना था । गङ्गाने में एक शूद्र था गया । वेद काल में मूढा शूद्र का विचार नहीं था । वे विचार पुराण काल में आरम्भ हुए ।

आजकल आपके यहाँ चौका धर्म रह गया है । एक व्यक्ति म दुगा में जाति की रगोई में बाहर घसा देखा रहता था । उसने कहा सारी जिनदगी में मेरा धर्म ध्रष्ट नहीं हुआ—आज इस दुष्ट ने मेरा धर्म ध्रष्ट कर दिया ।

लोगों में अन्धम्यं स पूजा मया दात हो गई ।

उमने कहा—मैंने मन्दिरा नाम खाया रंढीदाजी की पर धिता पैर घाये कमी चौके म नहीं गया था आज यह दुष्ट विना पैर धोये चौके में चला गया ।

चौका धर्म रह गया । दिशोदास, प्रथु आदि ऋग्वेद के राजा थे । नुम्हारे ऋषि पाराशर किरात था । वह योजन गंधा के पुत्र कौरव और पाण्डव कोन था । छुआछूत कहा है । कहां से आई है । सब अज्ञान का मनोवृत्ति है । उदार बनो ।

धर्म त्वा पानो और दूध की तरह पवित्र है । हिन्दु वहा और मुन्निम हवा कहीं सुनी ।



कुर्येद में इना पृथ्वी, सूर्य भेद आदि ३३ देव माने जाते हैं। ये देव और उपनिषद् का एक ध्यान रहे। फिर जलमन्त्र स्थिरा अक्षय-२ देव की कल्पना हुई और ३३३ देव बन गये। राजाओं तक उनकी सत्परा ३३ करोड़ तक हो गई।

हिन्दुस्तान में तो ३३ करोड़ है भी लोगों ने गाय की पूँछ में ३३ करोड़ देवता माने। इनमें कोई अंतर्भव कहे तो उनकी मर्जा। पर उन समय भारत में ३३ करोड़ की आबादी थी उन ३३ करोड़ का जीवन गाय की पूँछ पर ही आधारित था। गोपच पर ही भारत का कृषि प्रधान जीवन तकन था।

गार्थों की रक्षा करना राजनीति है सब प्राणियों की रक्षा करने का आदर्श है। धर्म अन्तिम परमोपमः वैदिक धर्म का नारा है।

धर्म का मत अन्तिम रूप है। जीव रक्षा और प्राणी दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। मनु ने अन्तिम सत्य को धर्म बताया। अचार्य, प्रधान्य और अविप्रत समाज ध्यवस्था के लिये आरु-व्यक्त हुये।

गुरु यही जो ज्ञान देकर गुरु ने ज्ञान दिया—तमसो मा ज्योतिर्गमय।

धर्म के दो स्तर रहे—यज्ञ और व्रत। व्रतमय के पुरुं हवन आदि को ही बड़ा धर्म माना जाता था—पर व्रतमय, जावाल आदि ने दास्त्र ही बदल दिया।

जावाल ने संस्कृति को, महाभारत में द्रौपदी को, अज्ञातवन् और जनक के संवाद में ब्रह्म धर्म आदि की जो धारा बहाई है—और जो उपदेश परम्परामयी है—उससे यज्ञ का रूप जीवन की वृत्तियों में आई हुई कल्पितशाओं को रचि बनाकर जीवन का



विश्व वन्दनीय मुनि  
श्री सुशील कुमार जी महाराज

जिन्होंने

अपनी विदेश-यात्रा में

असंख्य युवकों को

अहिंसा और सद् आचरण

की दीक्षा दी

हमारा कोटि-कोटि नमन !

प्रधान ।

अध्यक्ष, जैन

मंत्री ।

डॉक्टर धनराज जैन

यंग फ्रेंड्स एसोशियेशन

जैन नगर, मेरठ ।





कष्ट उठा, जग का हित करते,  
सत्र, सुजन, सखिता श्री चन्दन ।  
जग उपकारी, मुनि सुशील के,  
चरणों में श्रद्धायुत वन्दन ॥

मुनि श्री सुशील कुमार जी के  
विदेश-यात्रा से वापस

स्वदेश पधारने पर

हार्दिक वन्दन के साथ अभिनन्दन !

कमल हैण्डलूम क्लाय डीलर  
सुभाष बाजार, मेरठ ।

फोन : ७४५५१

७४६२६ निवास



जने जगत के अयोध्या के हैं,  
विश्वकर्मा के हे नव प्राण ।  
तुमने ऊंचा किया निरन्तर,  
भारत भूमि का धर्मगत ॥

**नि सुशील कुमार जी महाराज**

के

१२ सप्ताह की विश्व-यात्रा पश्चात् स्वदेश आगमन

पर

**हार्दिक संगल कामनाओं**

के साथ

**चिरंजीशाह राजकुमार**

तीर्थकर महावीर मार्ग, मेरठ ।

तार : महावीर

फोन : ७५५८०-७३१२६ आफिस

७३८४७-७५६२७ फैक्ट्री

७२३१० निवास

पुस्तकालय, दिल्ली

संस्कृत विभाग

पृ. नं.

विद्यार्थी नाम

श्री गणेशाय नमः

संस्कृत विभाग

पृ. नं.

श. ग. विद्यार्थी नाम

पृ.

श्री गणेशाय नमः

महाराज श्री मुनि सुशील कुमार जी

के

विदेश भ्रमण की वापसी पर

**शत् शत् नमन !**

प्राणी मित्र

**आनन्द राज सुराणा**

नई दिल्ली

२५५ '२५५ १५०

# सर्वज्ञ प्रज्ञा

लीलावती वं  
पुस्तक :

श्रीमती विद्यावती वं  
स १ :

श्रीमती कल्याण  
॥

श्रीमती कल्याण

श्रीमती कल्याण

श्रीमती कल्याण

श्रीमती कल्याण

श्रीमती कल्याण

श्रीमती कल्याण

श्रीमती कल्याण

श्रीमती कल्याण

श्रीमती कल्याण

श्रीमती कल्याण

भारतीय संस्कृति के प्रबल प्रपारक  
 अहिंसा और सत्य के संदेशवाहक  
 मुनि धी सुशील कुमार जो  
**आधुनिक विवेकानन्द बनें**  
 यही हमारी हादिक शुन कामना है !

**शंकर देव**

संसद सदस्य

२६, नार्थ एवेन्यु, नई दिल्ली

रचिपता :—

- एक विषय एक सरकार
- जल्दी रीपड़ी
- क्या ईश्वर है ?
- इन्द्रा गांधी समग्र ह्य में
- सन निराहारिणी
- मानिस्या योगिनी
- मौलिक आचार पाठ रीत निवे मौलिक कर्तव्य

भूत स्ये

( २१५५ )  
१९५५  
२२, कोटा रा. .  
कलिका रा. .

कलिका रा. .

१९५५



